(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2022

ISSUE No- (CCCXXXIV) 334

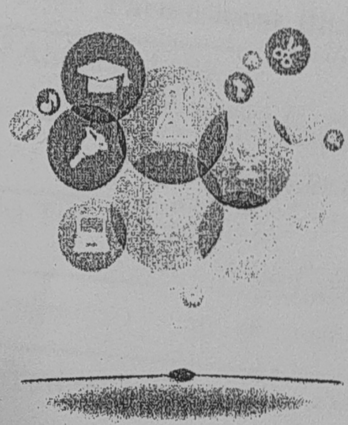

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Scanned with ACE Scanner

18	अभिजित बॅनर्जी यांचे गरिबीविषयक विचार — डॉ.संगिता भालचंद्र काटकर	64
19	बाणभट्ट के लक्ष्मी - विषयक वर्णन का समीक्षात्मक अध्ययन — डॉ. अर्चना पाल	68
20	जागतिकोकरणात दुर्बल घटकाचे विविध प्रश्न आणि आव्हान — प्रा. विशाखा के. मानकर	71
21	शेतक-यांच्या समस्या सोडविण्यात शेतकरी चळवळीचे योगदान — प्रा. कमलेश मानकर	75
22	डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे साहित्यविषयक विचार व कार्य — डॉ. साधना जिचकार	78
23	महात्मा फुले का शैक्षणिक दृष्टिकोण और कार्य — डॉ.शिवाजी भदरगे	82
24	Demonetisation and Its Effect on Indian Economy — Parmeshwar Bhaurao Rathod	87
25	Human Right And Status Of Child Abuse In India — Dr. Pramila Haridas Bhujade	89
26	Ghalibki Khutoot Nigari : Ek Jaiza — Dr.Reshma Tazayeen	95
27	Indian Constitution and Rights of the Tribal Community — Mr. Sunil Ganpat Jiwane	100
28	भारतीय लोकशाहीची वाटचाल : एक दृष्टिक्षेप — प्रा. डॉ. प्रमोद एम. तालन	104
29	उस्मानाबाद जिल्ह्यातील तालुकानिहाय लोकसंख्या साधनसंपत्तीचा भौगोलिक अभ्यास — प्रा.डॉ.आसाराम दि.चव्हाण	107
30	Challenges Before the Indian Education System — Dr. Parikshit Layek	111
31	ग्रामीण कथेचा समर्थ, आविष्कार :''नागीण'' — प्रा. डॉ. धनराज माने,	115
32	Learning Disabilities Among Girls Studying In Rural And Urban Areas: A Comparative Study — Dr. Vaishali Nandagawali Panhekar	119
33	Significance of Article 19 (1) (a) under Indian Constitution – A Study — Dr. Nirajkumar Deomanrao Ambhore	123
34	मानसिक आरोग्यासाठी ताण व्यवस्थापनाच्या आधुनिक दृष्टीकोनाचा दैनंदिन जीवनात उपयोग — स.प्रा. मोरे तुकाराम सुर्यभानराव	127
35	ग्रामीण जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति के कवि : केदारनाथ अग्रवाल — प्रा. ;डॉ. तीर्थराज राय	134
36	Indian Women and Agriculture — Dr. V.L.Bhangdiya / Ku. Komal Suganchandji Taori	140

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 334 (CCCXXXIV) B
ISSN : 2278-9308
January, 2022

महात्मा फुले का शैक्षणिक दृष्टिकोण और कार्य

डॉ.शिवाजी भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभाग प्रमुख,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायत नगर जिला नांदेड ४३१८०२
ई–मेल:shivajib1429@gmail-com.(९९२३०६२३४०)

महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षा को विशेष महत्व दिया और कहा कि शिक्षा के बगैर इंसान की उन्नति संभव है। उन्होंने भारतीय समाज का गहन अध्ययन किया था। शुद्रातिशूद्र तथा नारी की सामाजिक, धार्मिक गुलामी का प्रमुख कारण अशिक्षा है, ऐसा मानते थे। उन्होंने भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बडी क्रांति की। साथ ही शिक्षा से संबंधित मौलिक विचार प्रस्तुत किए। १८५५ में उन्होंने इसी दृष्टि से तृतीय नाटक लिखा। नारी, शुद्रातिशुद्र में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। शिक्षा के बिना भारतीय समाज का विकास संभव है। यह उनका मानना था। आज शूद्रातिशूद्र में शिक्षा के विषय को लेकर जागृति पैदा हुई है। इसका पुराश्रेयफुले दंपति को जाता है। आधुनिक काल में शिक्षा के संबंध में फुलेने क्रांतिकारो विचार प्रस्तुत किए और भारतीय समाज में लागू करने का ऐतिहासिक कार्य भी उन्होंने किया है। वह बोल के सुधारक नहीं थे बल्किकृतिशीलसुधारक थे।

भारत में अंग्रेज आने के पूर्व के समय में शिक्षक केवल ब्राह्मणों के हाथ में ही थी। अंग्रेजी सत्ता भारत में स्थापित होने के बादही शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खुले। लेकिन शूद्र जाति की शिक्षा के प्रति ब्राह्मणों का विरोध होने के कारण अंग्रेजों ने शिक्षा को ऊपर से नीचे की ओर जाने वाले सिद्धांत के आधार पर अपनी योजना बनाई। भारत में जाति व्यवस्था पर आधारित समाज व्यवस्था होने के कारण शिक्षा का प्रचार प्रसार ऊपर से नीचे की ओर नहीं हो सका। इस दृष्टि से फुले ने शिक्षासंबंधी विचारों को रखा। फुले ने श्ब्राह्मणों की चालाकीश नामक किताब में लिखा है कि, शिक्षा के अभाव में शूद्रों में स्वाभिमान का नहींरहा था। वह उसकी गुलामी करता रहा। फुले ने कहा कि,
ज्ञानहीन शुद्र लज्जाहीन हुआ।
जूते उठाए ब्राह्मणों के।।

इस प्रकार शिक्षा के द्वार केवल ब्राह्मणों के लिए खुले थे। गैर ब्राह्मण तथा इनकी नारियों के लिए शिक्षा के दरवाजे इनके धर्म में बंद कर दिए थे। ऐसी परिस्थिति में भारत में शिक्षा का विकास क्या संभव था? भारतीय समाज सामाजिक तथा धार्मिक गुलामी में फंसे होने के कारण उसका विकास नहीं हो पाया। भारतीय समाज का यह हाल सामाजिक, धार्मिक गुलामी होने के कारण ही हुआ।आगे इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज का ही एकहिस्सा सदियों तक हरक्षेत्रमें गुलाम बना रहा।

शिक्षा का महत्व

फुले युग दृष्टा समाज सुधारक थे। उन्होंने भारतीय समाज का गहन अध्ययन किया था। गैर ब्राह्मण समाज को शिक्षा का अधिकार नहीं था। शुद्रातिशूद्र तथा नारी को शिक्षा देने के लिए धर्म ने प्रतिबंध लगा रखा था। केवल इतना ही नहीं शुद्रातिशूद्र तथा नारी के लिए शिक्षा ग्रहण करना पाप है। ऐसी मान्यताथी। अतः भारतीय समाज के बहुसंख्यक लोग सदियों से अज्ञान के अंधेरे में जी रहे थे। उनकी अज्ञानता का लाभ उठाकर झूठे ग्रंथ उनके माथे पर थोपकर मिथ्या परंपराएं बताई गई। इसी प्रकार व्रत उपवास शुरू किए गए। समाज में अंधविश्वास फैलाया गया है। इन सभी बातों के अज्ञानी लोग शिकार हुए। उसमें किसी विषय पर तर्क शुद्ध पद्धति से विचार करने की क्षमता उनमें नहीं थी। अतः कोई कटु असत्य बोलता है, तो उसे उस पर आंखें मूंदकर विश्वास कर लेते थे। रिणाम स्वरूपशूद्रातिशूद्र तथा नारियों को गुलामी का जीवन जीना पडता था। वह अपना नसीब कादुखोडालेकरजितीथी। किस्मत थी लिखा है मानकर चुपचाप दुख सहन कर थे। इन सभी बातों का कारण केवल अविद्या ही है।जिससे शुद्रातिशूद्र तथा नारी को

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 334 (CCCXXXIV) B
ISSN : 2278-9308
January, 2022

गुलामी का जीवनजीनापडता था। ऐसा उनका स्पष्ट मत था। इसलिए फुले ने विद्या के महत्व की व्याख्या करते हुए कहा है कि,

विद्या विना मती गई।
मती बिना गति गई।
गति विना नीति गई।
निती विना संपत्तिगई।
संपत्ति बिना शूद्र ध्वस्त हुआ।
इतना सारा अनर्थ एक अविध्या से हुआ।

भारत में शिक्षा की स्थिति को ध्यान में रखकर कुछ शिक्षा सुधारों कों के लि विलियम हंटर की अध्यक्षता में ८८२ में एक शिक्षा आयोग की स्थापना की गई थी। इस आय के सामने महादेव मोरेश्वर कुंटे एक प्रसिद्ध ब्राह्मण ने कनिष्ठ वर्ग की शिक्षा के प्रति स्पष्ट शुरू से विरोध दर्शाया था। उन्होंने हंटर आयोग के सामने यह विचार रखा था कि, ष्महारों को पाठशाला में प्रवेश मिले इस प्रश्न को स्वयं महारों और ढेडों ने नहीं उठाया है। इसमें कुछ सत्य नहीं है। वह प्रश्न अव्यावहारिक है। भावना प्रदान अंग्रेज अधिकारी व्यावहारिक देसी सुधारकोंकायह आंदोलन निराधार है। इसे स्पष्ट होता है कनिष्ठजातियोंके लोगों कों शिक्षा प्रदान करने के लिए सुसिक्षित ब्राह्मण लोगों का विरोध १८८२ तक भी कम नहीं हुआ था। ज्योतिराव फुले १८४८ में शूद्रातिशूद्र और लडकियों के लिए पाठशाला शुरु की थी। फुले ने शिक्षा दिलाने के लिए जो कार्य शुरू किया था उस कार्य का विरोध ब्राह्मणों ने किया।उन्होंनेश्गुलामगिरीश, किसान का कोडा'ग्रंथों के माध्यम से अपने विचार शिक्षा आयोग को पेश किए थे।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति फुलेका दृष्टिकोण :

क्रांतिबा ज्योतिबा फुले ने प्राथमिक शिक्षा को लेकर विशेष बल दिया था। लगभग १२ वर्ष की आयु के बच्चों को मूलत:प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य रूप से देनी चाहिए। यह बात उन्होंने हंटर शिक्षा आयोग के सामने रखी थी। देश की जनता का लक्ष्य प्राथमिक शिक्षा की ओर नहीं है। इस बात का भी ध्यान आकर्षण हंटर शिक्षा आयोग के सामने उन्होंने किया था। पहले की अपेक्षा प्राथमिक पाठशाला में छात्रों की संख्या बढ गई थी लेकिन, समाज की प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता पूरी करने की दृष्टि से वह अधूरी ही पडरही थी। सरकार एक विशेष टैक्स शिक्षा के लिए लेती है, इस कर की एकत्रित होने वाली राशि शिक्षा पर खर्च नहीं होती है। इस बात की ओर भी उन्होंने ध्यानाकर्षण किया था। उन्होंने स्पष्ट कहा था की, यह प्राथमिक शिक्षा के लिए बहुत ही अच्छीबात नहीं है। हमारे प्रांत में ज्यादातर देहातों में रहने वाले बच्चे पाए जाते हैं। उनकी प्राथमिक शिक्षा के लिए अगर सुविधा नहीं हो तो वह बच्चे शिक्षा के प्रवाह में नहीं आ सकते हैं।इसलिएउनबच्चोंके लिए प्राथमिक शिक्षा की सुविधा सरकार की ओर से की जानी चाहिए। किसानों की गरीबी और अशिक्षाके कारण शिक्षितसभीवेआंखें मूंदकर मान लेते थे। इसका कारण उनका अध्ययन था। ऐसा फुल एचडी का स्पष्ट मत था।

ज्योतिराव फुले ने अपनी बात रखते हुए कहा कि, किसान एवं तत्सम वर्ग के लोगों को शिक्षा का लाभ उठाना नहीं आता है।उनके बच्चे प्राथमिक, माध्यमिक पाठशाला में जाते तो है लेकिन, गरीबी के कारण यह बच्चे अपने शिक्षा बीच में ही छोड देते हैं। इन शिक्षा छोडेहुए बच्चों का भविष्य अंधकार मय हो जाता है। इन बच्चों को शिक्षा नहीं छोडनी चाहिए। इसके लिए सरकार की ओर से किसी प्रकार की व्यवस्था होनीआवश्यक है।पाठशाला में छात्रों की संख्या में बढोतरी करने के साथ—साथ अपने बच्चों को पाठशाला में भेजने के लिए मां बाप को प्रोत्साहित करें और उन्हें शिक्षा के प्रति रुचि पैदा करें। यह सबसे बडी अहम भूमिका हो। इसके लिए उन्हें छात्रवृत्ति मिलनी चाहिए चाहे वह वार्षिक हो या छह माही पुरस्कार के रुप में ही क्यों ना हो मगर छात्रवृत्ति मिलनीहोगी। १२ वर्ष की आयु के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा शक्ति से देनी चाहिए। ऐसे शिक्षाके प्रति उनके स्पष्ट विचार थे।

महार, मांग तथा अन्य पिछडे वर्ग की शैक्षिक अवस्था अत्यंत गंभीर थी। उन्हें जातिभेद के कारण दूसरी जाति के बच्चों के साथ कक्षा में बैठने नहीं दिया जा सकता था। इन पाठशाला में कनिष्ठ जाति के बच्चों को शिक्षा देने का जोरों से विरोध किया जाता है। इसलिए सरकार ने

Scanned with ACE Scanner

उनके लिए खास पाठशाला निकालीथी।परंवह पाठशाला कुछ बडे शहरों में ही थी। पुणे शहर में स्थित उनके पांच हजार से भी ज्यादा जनसंख्या है, फिर भी यहां केवल एक ही पाठशाला थी।उस पाठशाला में ३० से भी कम छात्र पडते हैं। इस बात को सरकार के ध्यान में लाकर महारानी के घोषणा पत्र के अनुसार सरकार से अनुरोध करते हुए कहा कि, ‘जिस स्थान पर अछूतों की बडी बस्ती होगी, वहां उनके लिए स्वतंत्र पाठशाला शुरू करनी चाहिए।’

प्राथमिक पाठशाला में योग्य अध्यापकों की नियुक्ति होनी चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि, प्राथमिक पाठशाला में ब्राह्मण शिक्षकों की प्रमुखता से नियुक्ति की जाती है। यह बात कनिष्ठ वर्ग के हित की दृष्टि से और प्राथमिक शिक्षा का प्रसार करने के लिए योग्य नहीं है। ऐसा उनका मत था। ब्राह्मण शिक्षकों के विषय में उनके अत्यधिक बुरे अनुभव थे। इसलिए उन्होंने कहा कि ब्राह्मण शिक्षक कनिष्ठ जाति के विद्यार्थियों से अच्छे व्यवहार करते हैं। इसलिए प्राथमिक शिक्षक किसान वर्ग से ही होने चाहिए।वे किसान वर्ग के विद्यार्थियों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।फुले का यह मत वैज्ञानिक था।

पाठ्क्रम में सुधार हेतु फुले ने अपने विचार व्यक्त किए थे, पाठशालाओं के पाठ्क्रम में मोडु, बालबोध, लेखन वाचन, गणित की जानकारी, सर्वसाधारण इतिहास, भूगोल, व्याकरण का प्राथमिक ज्ञान होनाचाहिए। इसी प्रकार की नीति स्वास्थ्य संबंधी पाठ्चक्रममेंपाठ सम्मिलित करने चाहिए। इस प्रकार से पाठ्क्रम के विषय में कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं उन्होंने सरकार को दी थी। इसके साथ ही फुलेने प्राथमिक शालाओं की निरीक्षण योजना में भी सुधार सूचित किया था। उनका मानना था कि, प्राथमिक शालाओं की निरीक्षण योजना सतोष और अधूरी है।दुय्यम पाठशालाओं की जांच करने वाले वर्ष में सिर्फ एक बार ही पाठशाला को भेट देते हैं।वे कम से कम ३ महीने के पश्चात सभी पाठ शालाओं की भेंटदेकर जांच करनी चाहिए, बिना किसी पूर्व सूचना के। अन्य समय में भी जांच अधिकारियों को पाठशाला में जाना चाहिए। इसके कारण प्राथमिक शाला पर पूरा नियंत्रण रहेगा। ऐसा फुले जी का स्पष्ट मत था।

उच्च शिक्षा के प्रति फुले का दृष्टिकोण:

सरकार उच्च शिक्षा पर ध्यान नहीं दे रही है। उच्च तथा धनी ब्राह्मण प्रभु आदि जातियों में शिक्षा के प्रति रुचि पैदा हुई है। इसलिए इन वर्गो के लिए सरकारी सहायता को धीरे धीरे कम कर देना चाहिए। लेकिन जिस मध्यम तथा निम्न वर्ग के शिक्षा की विशेष प्रगति नहीं हुई है, ऐसे वर्ग का अनुदान रोका जाना आपत्तिजनक होगा। अनुदान रोकने से शिक्षा के क्षेत्र की बहुत बडी हानि होगी। इस बात का उन्हें डर भी था। शिक्षा की जिम्मेवारी निजी संस्थानों को सौंपने के वे विरोधी थे। किसी भी परिस्थिति में शिक्षण संस्थाएं निजी संस्थाओं को नहीं सौंपा नहींजाना चाहिए। व्यवसायिक शिक्षा, रोजगार शिक्षा सभी स्तर की शिक्षा को सरकारी नियंत्रण में रखा जाना हीउचित होगा। दोनों संस्थाओं का विकास करने के लिए आवश्यक कृपा दृष्टि केवल सरकार ही दिखा सकता है।येअपने विचार फुले ने हंटर आयोग के सामने प्रस्तुत किए थे।

फुले ने उच्च शिक्षा को सुलभ बनानेके लिए अग्रसर थे।उन्हें लगता था मैट्रिक परीक्षा के लिए विषयों के किताबों की सूची अन्य राज्यों के गजट में प्रकाशित की जाती है। इसी प्रकार से हर राज्य में किताबों की सूची प्रकाशित की जानी चाहिए।और मुंबई विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए फुले ने कहा था कि, ‘मुंबई विश्वविद्यालय ने निजी अध्ययन करके प्रवेश परीक्षा में बैठने की अनुमति देकर जनता को एक प्रकार का वरदान दिया है। इसी प्रकार का वरदान उच्च स्तर परीक्षा के संबंध में भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों प्राप्त कराएं, ऐसी मैं ऐसा करता हूं। बी. ए. या एम. ए. स्नातक परीक्षा के विषय में निजी अध्ययन को मान्यता मिलने से अनेक युवक निजी तौर पर अध्ययन करने में अपने समय का सदुपयोग करेंगे ऐसे ज्योतिराव फुले का कहना था।उच्च शिक्षा में व्यापारिक तथा तकनीकी शिक्षा को लेकर बात करते हुए फुले कहते हैं कि, सरकारी महाविद्यालयोंकी शिक्षा व व्याप्वहारिक नहीं है। केवल लिपिक तथा अध्यापकों का बडे स्तर पर निर्माण करने के लिए ही यह शिक्षा उपयुक्त है। भविष्य में स्वतंत्र जीवन जीने के लिए उपयोगी व्यावहारिकशिक्षा पाठ्क्रम में नहीं है। ऐसा आरोप लगाया था इसलिए सरकारी महाविद्यालयों के पाठ्क्रमों में व्यापारिक तथा तकनीकी हिंदी को शामिल किया जाए यह उनकी मांग थी। फुले के विचार को साक्षात कृति में उतारने वाले आधुनिक भारत के निर्माता डॉ

Scanned with ACE Scanner

बाबासाहेब आंबेडकर ने सर्वसामान्य आम जाति के पिछडे दलित वर्ग के बच्चों को शिक्षा में प्रगति करने हेतू छात्रवृत्ति का भारतीय संविधान में प्रावधान बनाया। जिसके तहत आजन कहीं विद्यार्थी पढाई के क्षेत्र में छात्रावास को पाकर अपना विकास साथ रहे हैं। ज्योतिराव फुले नारी शिक्षा के प्रबल समर्थन थे। इसलिए उन्होंने हंटर शिक्षा आयोग से नम्र निवेदन किया था कि, नारियों में प्राथमिक शिक्षा का प्रसार बडे पैमाने पर हो, ऐसी योजनाओं को मंजूरी देनी चाहिए।

ज्योतिराव फुले के शैक्षणिक कार्य.

ज्योतिराव फुले केवल बोलके सुधारक नहीं थे, उन्होंने अपने विचारों को कृति में उतारकर समाज सापेक्ष कार्यकिया। उन्होंने शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए थे। वैसे वेएक एक शिक्षक, संस्थाकार तथा महान समाज सुधारक भी थे। इसलिए उन्होंने अनुभव पर आधारित मौलिक शिक्षा के संबंध में विचार प्रस्तुत किए। हिंदू धर्म ने सदियों से शिक्षा से वंचित रखा ऐसे अछूतों की लडकियों के लिए फुले ने १८४८ के अगस्त माह में पुणे के बुधवार पेठ में भिडे के बारे में पाठशाला शुरू की थी। उस समय पर केवल २१ वर्ष के थे। लडकियों के लिए भारतीय व्यक्ति द्वारा शुरू की गई यह पहली पाठशाला थी। वह स्वयं के खर्चे से इस पाठशाला को चलाते थे। ज्योतिराव फुले ने अपनी पत्नी को प्रथम पढाकर लडकियों को पढाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। बुधवार पेठ में ३ जुलाई को केवल तीन लडकियों के साथ लेकर फुले ने पाठशाला शुरू की थी। इसके पश्चात १७ दिसंबर, १८५१ को रास्ता पेठ में तथा १५ मार्च को ८५२ को वेताल पेठ में लडकियों के लिए पाठशालाएं शुरू की थी। फुले द्वारा नारी शिक्षा के महान कार्य को ध्यान में रखकर, मेजर कॅन्डी की अध्यक्षता में सरकारी शिक्षा विभाग की ओर से १६ नवंबर, १८५२ को उनका अभिनंदन किया गया।

आगे चलकर बॉम्बे गार्डियन समाचार पत्र ने पुणे के सरकार का समाचार प्रकाशित किया था। उसमें उन्होंने लिखा था कि, युवक ज्योतिराव फुले ने कुछ वर्ष लगातार कार्य करके अपने देशवासियों में शिक्षा का प्रचार करके बहुत बडी प्रगति की। जो विद्यार्थी और लोग दिन के स्कूल में पढने नहीं जा सकते थे उनके लिए फुले ने १८५५ में रात्रि कालीन पाठशाला शुरू की थी। केवल पाठ शालाओं की स्थापना करके ही वे रुके नहीं बल्कि, शिक्षा के विषय में जागृति पैदा हो इसके लिए उन्होंने विपुल मात्रा में लेखनकार्यभी किया। शिक्षा के प्रसार के संबंध में सरकारको अनेक निवेदन भेजे। २४ सितंबर, १८७३ कोश्सत्यशोधक समाजर की स्थापना करके इस समाज की ओर से शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष प्रयत्न किए। शूद्रोंके बच्चे इंजीनियरिंग कॉलेज में जाते थे। फुले ने गरीबों के बच्चों को मुफ्त प्रवेश के लिए समाज की ओर से निवेदन प्रस्तुत किया था। परिणाम स्वरूप कालेज के प्रिंसिपल ने दो तीन बच्चों को निशुल्क प्रवेश किया था।

सारांश:

उपरोक्त शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, ज्योतिबा फुले एक महान शिक्षा प्रेमी, शिक्षा शास्त्री थे भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके यह विचार देश की गरीब जनता के कल्याण की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। शिक्षा उच्च समाज से निम्न समाज की ओर स्वाभाविक रूप से झडते हुए जाएगी शिक्षा शास्त्री मेकॉले के इस सिद्धांत को उन्होंने झूठा साबित कर दिया। पहले निम्न समाज को शिक्षित करने से ही शिक्षा का प्रचार प्रसार होगा। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा को महत्व देकर कहा कि, प्राथमिक शिक्षा सक्ति की करनी चाहिए, ऐसा उनका मत था। पाठशाला, महाविद्यालय के पाठ्यक्रम, व्यवसायिक शिक्षा, अध्यापक, छात्रवृत्ति, नारी शिक्षा, अध्यापकों का वेतन आदि विविध विषयों के संदर्भ में फुले ने प्रखड विचार व्यक्त किए। ज्योतिराव फुले के शिक्षा संबंधी विचार क्रांतिकारी तथा मौलिक है।अत: फुले ने शिक्षा के प्रसार के लिए जो कार्य किया था उनके द्वारा १९ वी सदी में प्रस्तुत किए गए शिक्षा संबंधी विचार आज २१वीं सदी में अनुकरणीय है और हमारे भारतीय समाज के लिए उतने ही महत्वपूर्ण है।आज स्वतंत्र भारत में भी प्राथमिक शिक्षा पर शक्ति नहीं की जा सकती, यह भारतीय शिक्षा प्रणाली के खुद कहानी है। भारत को स्वतंत्रता मिली ७५ वर्ष बीत गए फिर भी देश का बहुत बडा समाज आज भी प्राथमिक शिक्षा से वंचित है।फुलेके इस बात पर आज विचार करना आवश्यक है।

Scanned with ACE Scanner

संदर्भ ग्रंथ सूची:
१) म. फुले. – ब्राह्मणोंकी चालाकी– म. फुले: समग्रवाङ्मय १९९१।
२) धनंजय कीर.– म. फुले: शैक्षणिक तत्वज्ञान और कार्य लेख. म. फुले गौरव ग्रंथ १९८२।
३) धनंजय कीर. ज्ञानोदय २ अगस्त १९५३ (म. फुले– धनंजयकीर)
४) म. फुले: समग्र वाङ्मय, किसान का कोडा।